Lecture-96.

क्रॉमवेल के संवैधानिक प्रयोगों का महत्व

- ममता रानी
अतिथि सहायक प्राध्यापक
एल० एन० एस० आर० के० एस०
कॉलेज, सहरसा
इतिहास विभाग
बी० ए० पार्ट - I
पेपर - 2.

SHRIRAM Life Insurance
YOUR PARTNER FOR PROSPERITY

05 Thursday

Pollard के अनुसार "The instrument of goverment was the comprehensive act of Union in english history."

(ii) इन प्रयोगों ने यह सिद्ध करके दिखा दिया कि पार्लियामेंट की प्रभुता से ही किसी स्वतन्त्र सरकार की सभी समस्याओं का

06 Friday

हल नहीं की जा सकती किन्तु पार्लियामेंट का अपने निर्वाचकों के प्रति उत्तरदायित्व करना चाहिए तथा कुछ सुधार निर्वाचन में अवांछनीय। यद्यपि यह उद्देश्य दो शताब्दियों तक अपूर्ण रहा फिर जनता का ध्यान इस

और आकर्षित होना कम महत्वपूर्ण नहीं था।

(iii) शक्तियों के पृथक-पृथक्करण का सिद्धान्त भी इसी समय प्रतिपादित किया गया, जिसके परिणामस्वरूप राजा और पार्लियामेंट दोनों की निरंकुशता पर छाप लगाई जा सकती थी।

(iv) इन प्रयोगों के अन्तर्गत जनता के मौलिक अधिकारों को छीन नहीं सकती थी।

Saturday 07 Week-45 312-054

Sunday 08 Week-45 313-053

(v) क्रॉमवेल धार्मिक सहिष्णुता पर बल देता था। धर्म सुधार के पश्चात् से लेकर क्रॉमवेल के शासनकाल तक कोई भी सरकार इतनी धर्म सहिष्णु नहीं थी। यह

09 Monday 314-052 Week-46

मानवीय है कि पुनर्स्थापन-काल में क्लेरेन्डन बिल पास किया गया। फिर भी धार्मिक सहिष्णुता की बात लोगों के स्मरण रही और अवसर पाते ही इसके लिए नियम बनाये गये।

(vi) शासन व्यवस्था के सिद्धान्तिक प्रश्नों पर भी दृष्टिपात किया

10 Tuesday 315-051 Week-46

गया। राजा की स्वेच्छाचारिता एवं निरंकुशता के पश्चात् पार्लियामेंट की निरंकुशता तथा बाद बाद में सेना की निरंकुशता सामने आ गई। यह इतना दुखदायी सिद्ध हुआ कि इसका अन्त करना पड़ा। इससे लोगों

प्र॰ क्रामवेल के संविधानिक प्रयोगों के महत्व पर टिप्पणी लिखिए।

उ॰ क्रामवेल ने जब देखा कि प्रजातन्त्र में उसने जो भी प्रयोग किया वे असफल हो रहे हैं तो उसने राजतंत्र की स्थापना की। यद्यपि उसके प्रजातन्त्रीय प्रयोग असफल अवश्य हुए फिर भी इनका वैधानिक इतिहास में काफी महत्वपूर्ण स्थान है। सन 1660 ई॰ तक पार्लियामेंट पूर्णतया परिपक्व अवस्था में आ गई थी। इसका स्थान 1641 ई॰ से पहले की भाँति क्षणिक और अनिश्चित नहीं था। वह अब अत्यन्त शक्तिशाली संस्था बन गई थी। इसकी इच्छा का राजा और देश दोनों करते थे। किन्तु अभी इसमें इसमें दुर्बलता अवश्यक थी। इसे राजा अपनी इच्छा अनुसार भंग कर सकता था। चार्ल्स द्वितीय ने बहिष्कार बिल के अवसर पर इसे अमान्य घोषित कर दिया। वैसे ही जेम्स ने भी किया। इतना होने पर भी यह माननीय है कि पार्लियामेंट की पूरी निकटस्थ थी।

(1) क्रॉमवेल के प्रयोगों द्वारा ही स्कॉटलैंड आयरलैण्ड और इंग्लैंड का एकीकरण सम्भव हो पाया

Wednesday 11 Week-46 316-050

में अनुमान लगाया कि तीनों के परस्पर समझौतों के आधार पर स्थायी सरकार की स्थापना सम्भव हो सकती है।

(vii) क्रॉमवेल के प्रयोगकालीन समय में ही समान अवसर वयस्क मताधिकार, धार्मिक स्वतन्त्रता इत्यादि महान् भावनाओं के प्रादुर्भाव हुआ जो कि आज तक

Thursday 12 Week-46 317-049

विश्व सभ्यता एवं संविधान पर अमिट छाप डालते हैं। जॉन लिलबर्न हुआ जो कि आज तक विश्व सभ्यता एवं संविधान। जॉन लिलबर्न एक अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति था। उसने वयस्क मताधिकार और गणतन्त्रवाद का प्रचार किया।